एलजीबीटी पर आधारित फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” और “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन

बी.ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम उपाधि हेतु प्रस्तुत

(परियोजना कार्य)

सत्र : 2018-2021

हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता विभाग

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज देव नगर, कारोल बाग, दिल्ली -110005

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

शोध निर्देशिका

डॉ. सविलता यादव

शोधार्थी

दिपेश सिंह मेहरा

अनुक्रमांक - 919

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार (ऑनर्स)

<u>प्रमाण पत्र</u>

प्रमाणित किया जाता है की दिपेश सिंह मेहरा, हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार (ऑनर्स) द्वारा लिखित यह परियोजना कार्य **"एलजीबीटी पर आधारित फ़िल्म 'माई ब्रदर निखिल' और 'शुभ मंगल ज़्यादा सावधान' की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन"** मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है। मैं बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम उपाधि हेतु इसकी अनुशंसा करती हूँ। शोधकर्ता के कार्य से मैं संतुष्ट हूँ मुझे आशा है कि इनका शोध कार्य पत्रकारिता के अन्य छात्रों के लिए उपयोगी व मार्गदर्शन होगा।

मैं शोधकर्ता की उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

हस्ताक्षर

डॉ. सविलता यादव

शोध निर्देशिका

घोषणा पत्र

मैं दिपेश सिंह मेहरा यह घोषणा करता हूँ कि मैंने **"एलजीबीटी पर आधारित फ़िल्म 'माई ब्रदर निखिल' और 'शुभ मंगल ज़्यादा सावधान' की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन"** नामक परियोजना कार्य डॉ. सविलता यादव के निर्देशन में पूर्ण किया है। मेरा यह शोध कार्य दिल्ली विश्वविद्यालय के बी.ए. ऑनर्स हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्यक्रम उपाधि हेतु प्रस्तुत जा रहा है। यह कार्य सर्वथा मौलिक है।

दिपेश मेहरा

शोधार्थी

आभार

मैं अपने परियोजना कार्य के पूर्ण होने पर सर्वप्रथम अपनी शोध निर्देशिका **डॉ. सविलता यादव** का हृदय से आभारी हूँ। जिनके सतत प्रेरणा व उपयोगी दिशा-निर्देश द्वारा मेरा मार्ग सदैव प्रकाशित रहा है। यह शोध कार्य उनके विद्वतापूर्ण निर्देशन एवं मेरे प्रति उनके सहज स्नेह का ही परिणाम है। शोध कार्य के समय सर्वदा मिलने वाला आपका निश्छल एवं स्निग्ध साहचर्य और साहचर्य जनित ज्ञानपुंज की आभा से आगे भी मेरा जीवन मण्डित एवं उल्लासित होता रहे, यही गुरु चरण में मेरी आकांक्षा है।

मैं अपने विभाग के सभी प्राध्यापकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। जिनका सहयोग मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा है।

दिपेश मेहरा

शोधार्थी

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या		पृष्ठ संख्या
•	**प्रस्तावना**	**07-08**
•	**अध्याय - 1 : एलजीबीटी का परिचय**	**09-19**
	1.1 एलजीबीटी का अर्थ	09-11
	1.2 भारत में एलजीबीटी	12-14
	1.3 भारत में एलजीबीटी का विकास	15-17
	1.4 निष्कर्ष	18
•	**अध्याय - 2 : एलजीबीटी और हिंदी सिनेमा**	**19-24**
	2.1 हिंदी सिनेमा में एलजीबीटी का चित्रण	19-21
	2.2 हिंदी सिनेमा में अभिव्यक्त एलजीबीटी समस्याएँ	22-23
	2.3 निष्कर्ष	24
•	**अध्याय - 3 : फ़िल्मों की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन**	**25-35**
	3.1 कहानी के आधार पर	25-26
	3.2 अभिनय के आधार पर	27-28
	3.3 सामाजिक सरोकार के आधार पर	28-29

3.4 संवाद के आधार पर 29-34

3.5 गीत संगीत के आधार पर 34-35

3.6 व्यवसाय के आधार पर 35

- **शोध निष्कर्ष** **36-38**
- **संदर्भ** **39-40**
- **परिशिष्ट** **41-44**

प्रस्तावना

मानव समाज मानवीय संबंधों का एक जटिल संगठन है। इस तरह की संरचना से अर्थ यह है कि मनुष्य अपनी भूमिका के अनुसार एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं और अपने कार्य करते हैं। समाज में किसी भी व्यक्ति की पहचान सबसे पहले उसके लिंग से की जाती है। इसी वजह से एलजीबीटी समुदाय के लोगों को अपने ही समुदाय के साथ एक निर्धारित जीवन एकांत में जीना पड़ता है। लैंगिकता आधुनिक समय में समाज के रहने वाले व्यक्तियों के लिए एक बहस का विषय है। भारत संस्कृति और धार्मिक विविधता का देश है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद और 20 और 21 वीं सदी के नेताओं की मजबूत राजनीतिक और धार्मिक दृष्टिकोण ने भारत में लैंगिकता और समलैंगिकता को विकृत मानव स्वभाव के पहलू में बदल दिया गया। लैंगिकता एक बहुआयामी प्रकृति का रूप है जो मानव की इच्छा, व्यवहार और पहचान से मानवों के बीच अंतर स्पष्ट करवाती है। लिखित और वैज्ञानिक रूप से सिद्ध किया जा चुका है कि पुरुषों और महिलाओं में लगातार समान-लिंग के प्रति भावनाओं और व्यवहारों का उत्पन्न होना सामान्य है । समलैंगिकता अपने आप में ही एक प्राचीन इतिहास है जो सभी प्रमुख सभ्यताओं में आदिम अभिलेखों में खोजा जा सकता है। संविधान के द्वारा एलजीबीटी समुदाय के लोगों को एक आम नागरिकों के तरह ही दर्जा देने के बाद धीरे-धीरे भारतीय समाज भी समुदाय को अपनाने की कोशिश कर रहा है। भारत में ऐसे कई मुद्दे हैं जो हिन्दी सिनेमा की फ़िल्मों के निर्माण का आधार बनते जाते हैं, एलजीबीटी समुदाय के मुद्दे हिंदी सिनेमा में विशेष रूप से कोई ज्यादा जगह नहीं ले पाए है। मुख्यधारा की हिंदी फिल्मों में बहुत

बहुत कम समलैंगिक, गे और ट्रांसजेंडर के प्रमुख पात्र देखे जाते हैं। व्यावसायिक हिंदी फिल्मों में हास्य सामग्री को दर्शाने के लिए एलजीबीटी पात्रों को अक्सर फिल्म के हिस्से के रूप में दिखाया जाता है। समुदाय की परेशानियों और तकलीफों को ना दर्शाने से ही है साफ़ पता चलता है कि व्यावसायिक हिन्दी फ़िल्मों में समुदाय के प्रति स्वीकार्यता की कमी है। इस शोध के ज़रिए एलजीबीटी समुदाय के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए भारत में एलजीबीटी समुदाय और उनके अधिकारों से सम्बंधित विषयों पर दृष्टि डाली गई हैं।इस शोध कार्य के अंतर्गत एलजीबीटी समुदाय को दर्शाती हुई दो हिन्दी फ़िल्मों को लिया गया है जिसमें तुलना करते हुए कई आधारों का समावेश किया गया है ।

शोध ग्रंथ के प्रथम अध्याय में एलजीबीटी का परिचय देते हुए एलजीबीटी का अर्थ, भारत में एलजीबीटी व भारत में एलजीबीटी का विकास को बताया गया है। द्वितीय अध्याय में हिन्दी सिनेमा में एलजीबीटी का चित्रण व अभिव्यक्त एलजीबीटी समस्याओं को बतलाया गया है। शोध के तृतीय अध्याय में फिल्मों की अंतर्वस्त्रों का तुलनात्मक अध्ययन कहानी, अभिनय, सामाजिक सरोकार, संवाद, गीत-संगीत, व्यवसाय के आधारों पर किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अंत में निष्कर्ष दिया गया है। तत्पश्चात् शोध निष्कर्ष दी गई है। परियोजना कार्य के अंत में संदर्भ एवं परिशिष्ट का भी उल्लेख किया गया हैं।

अध्याय - 1

एलजीबीटी का परिचय

1.1 एलजीबीटी का अर्थ

एलजीबीटी एक अल्पसंख्यक लोगों का समुदाय है जिसे समलैंगिक समुदाय भी कहा जाता है। यह समलैंगिक, उभयलिंगी, ट्रांसजेंडर, एलजीबीटी संगठन आदि के रूपों में भी परिभाषित किया जाता है। इस समुदाय के अंतर्गत वे सभी लोग आते है जो अपने आपको विषमलैंगिक यानी हेट्रोसेक्सुअल नहीं मानते है।

एलजीबीटी एक प्रथमाक्षर शब्द है जिसका वर्णन निम्न प्रकार से होता है:-

- **एल (L) लेस्बियन** - जब भी एक औरत को किसी औरत से प्यार हो तो उन्हें लेस्बियन कहा जाता है।
- **जी (G) गे** - जब भी एक आदमी को किसी आदमी से प्यार हो तो उन्हें गे कहते है।
- **बी (B) बाइसेक्सुअल/बाई** - जब किसी आदमी या औरत को आदमी और औरत दोनो से ही प्यार हो तो उन्हें बाइसेक्सुअल कहते है। इसमे आदमी को **बाइसेक्सुअल पुरुष** और औरत को **बाइसेक्सुअल महिला** कहा जाता है।
- **टी (T) ट्रांसजेंडर** - यह वह व्यक्ति होते हैं जिनका शरीर जन्म लेते समय कुछ और था और जब वह बड़े होकर खुद को समझे तो एक दम अलग जेंडर का महसूस करने लगे। इस स्तिथि में वह ट्रांसजेंडर कहलाते है। अगर कोई बच्चा जन्म से महिला के रूप में पैदा हुआ परंतु बड़े होते हुए उसने पाया कि वह एक पुरुष है तो वह एक **ट्रांस मेन** कहलाएगा । और ऐसे ही जब कोई पुरुष बड़ा

होकर अपने आपको महिला के रूप में देखता है तो वह **ट्रांस वुमेन** कहलाया जाएगा।

आज के समय में एलजीबीटी को **एलजीबीटीक्यूआइए+** भी कहा जाता है जिसने **क्यू - क्वीर, आइ - इंटरसेक्सुअल**, और **ए- एसेक्सुअल** लोगों के लिए इस्तेमाल होता है। **"+"** उन सभी समुदाय के लोगों के लिए इस्तेमाल होता है जो अपने आपको किसी और रूप, पहचान से बुलाते हैं जैसे पेनसेक्सुअल, नॉन बाइनरी, एरोमैंटिक आदि।

समलैंगिक समुदाय अक्सर कुछ प्रतीकों, विशेष रूप से इन्द्रधनुष के झंडे के साथ जुड़ा होता है। आम तौर पर इन्द्रधनुष ध्वज निर्माता गिल्बर्ट बेकर के अनुसार, प्रत्येक रंग समुदाय में एक मूल्य का प्रतिनिधित्व करता है जैसी गुलाबी - लिंग का, लाल - ज़िंदगी का, संतरी - उपचा--रात्मक का, पीला - सूरज की रोशनी का, हरा - प्रकृति का, फ़िरोज़ी - कला का, नीला - सद्भाव का और बैंगनी - आत्मा का। सबसे पहले यह इन्द्रधनुष का झंडा 25 जून 1978 में सैन फ्रैन्सिस्को की गे फ्रीडम डे परेड में बेकर और उनके साथियों द्वारा लहराया गया था। आज के समय में लाल रंग झंडे के सबसे ऊपर कर दिया है जैसा की असल इन्द्रधनुष में होता है। यह झंडा एलजीबीटी समुदाय का प्रतीक माना जाता है। यह समुदाय आम तौर पर विविधता और कामुकता का जश्न मानते हैं।

विश्व के विभिन्न देशों में एलजीबीटी का आगमन पहले ही माना जाता रहा है परंतु क़ानूनी तौर पर समलैंगिकता को गलत और अपराध माना जाता है। यह एक ऐसा समुदाय है जिसने आज तक समाज को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है परंतु समाज ने इनको बहुत तरीकों से ना अपनाते हुए, इनको अपने से अलग और समाज से भिन्न माना है। समलैंगिकता कोई नई घटना नहीं है।

इतिहास में समलैंगिक समुदाय को किसी भी अपराधी के तौर पर नहीं देखा गया है। हिंदू पौराणिक कथा और प्राचीन ग्रीस के ऐतिहासिक दस्तावेजों में सेम सेक्स का ज़िक्र आम लोगों की तरह ही किया गया है। परंतु आज के समय में समलैंगिकता को आम बनाने के लिए कई देशों में एलजीबीटी आंदोलन किए जा रहे हैं। इन आंदोलनो में सबसे प्रसिद्ध एलजीबीटी परेड मानी जाती है। आम तौर पर इसे प्राइड मार्च भी कहते है। एलजीबीटी परेड की शुरुआत अमेरिका में हुई जब अमेरिका में समलैंगिकता को गुनाह माना जाता था। 1950 में समलैंगिकता को मान्यता दिलाने के लिए इसकी पहली नींव रखी गई, फिर साल 1960 में अमेरिका के कई समलैंगिक कपल्स और ट्रांसजेंडर्स सड़कों पर उतर आए और यही दुनिया की पहली प्राइड परेड के तौर पर पहचानी गई। दुनिया के कई देशों ने सेम-सेक्स कपल्स को शादी तथा एक साथ रहने की मान्यता प्राप्त नहीं है, जिसके कारण कई समुदाय के लोग अपनी जान जोखिम में डाल देते है जो मानव अधिकार के विरुद्ध है। आज भी दुनिया के 70 से ज़्यादा देशों में समलैंगिकता को अपराध माना जाता है जिनमें से 30 देशों ने इसे मानव अधिकारों के अंदर मनाने से इनकार कर दिया और अगर कोई ऐसा करते पकड़ा जाए तो सज़ा-ए-मौत का दंड दिया जाता है और कई देशों में उम्र कैद की सज़ा है जैसे अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, पाकिस्तान, साउदी अरब, सूडान, यू ए ई, येमन, बांग्लादेश, मॉल्डीव्ज़, सिंगापुर आदि।

1.2 भारत में एलजीबीटी

भारत देश में समलैंगिकता प्राचीन समय से लेकर अभी तक एक विचार-विमर्श का मुद्दा रहा है। आज के समय में लगभग 27 लाख से ज़्यादा एलजीबीटी समुदाय के लोग भारतीय है (भारतीय जनगणना 2011) जिसमें से अधिकांश लोग अपने आपको सामाजिक रूप से स्वीकार नहीं कर पाए है क्योंकि आज भी भारत में समलैंगिकता को निषेध माना जाता है। लोग खुलकर ना इस बारे में बात करना चाहते है और ना इसको अपनाना चाहते है परंतु भारत के ऐतिहासिक दस्तावेजों में एलजीबीटी समुदाय का ज़िक्र बिलकुल आम लोगों की तरह ही किया गया है और किसी भी समुदाय के लोगों को कोई भी दंड या सज़ा जैसी चीजों का सामना नहीं करना पड़ा जिससे ऐसा प्रतीत होता है की प्राचीन समय के लोग उनको बिल्कुल आम लोगों की तरह ही देखते थे।

विकृतिः एवम् प्रकृति

सनातन धर्म के चार प्राचीन ग्रंथों में से एक ऋग्वेद में कहा गया है “विकृतिः एवम् प्रकृति” अर्थात जो अप्राकृतिक दिखता है वह भी प्राकृतिक है। कई विद्वान इसको समलैंगिकता या ट्रांसजेंडर लोगों के लिए इस्तेमाल किए जाने से जोड़ते है। प्राचीन भारतीय पाठ ‘कामसूत्र’ में एक पूरा अध्याय समलैंगिक समुदाय को समर्पित किया गया है। महाभारत में कई चरित्र हैं जो लिंग बदलते देखे गए है जिसमें से एक हैं शिखंडी, जो जन्म लेते समय महिला थी लेकिन वह अपनी पहचान पुरुष से करती थी। ऐसे ही बहुत से देवी देवताओं का ज़िक्र हिंदू धर्म की कई पुराणिक कथाओं में किया गया है जिन्होंने अपना लिंग परिवर्तन करके अनेक रूप धारण किए है जैसे अर्धनारीश्वर, मोहिनी, अरावन आदि। ऐसे ही कई प्राचीन ग्रंथ जैसे मनुस्मृति, अर्थशास्त्र, कामसूत्र, उपनिषद और पुराण

में समलैंगिक समुदाय के लोगों के कई उदाहरण है।

गुजरात के अंगार गाँव में कूँतची समुदाय द्वारा हर साल ट्रांसजेंडर लोगों का विवाह के रूप में एक रिवाज होली त्योहार के समय मानाया जाता है। हर साल मनाया जाने वाला यह त्योहार 150 सालों से बड़ी धूम धाम से मनाया जाता आ रहा है।

मुग़ल साम्राज्य के प्रसिद्ध सरमद कशनी की ग्रन्थसूची में बताया गया है कि कैसे वो एक हिंदू लड़के से प्यार कर बैठे थे और उनके अब्बू ने उन दोनो को साथ में रहने की इजाज़त भी दे दी थी। ऐसे ही बाबर के संस्मरणों में बाबर का एक लड़के से प्रेम की बातें साफ़ देखी व पढ़ी जा सकती है। बाबर ने अपने संस्मरणों में उस लड़के के लिए अपनी प्रेम भावनाएँ अभिव्यक्त करते हुए उन बातों का भी ज़िक्र किया है कि कैसे उन्होंने उस लड़के को राजनीति के चलते खो दिया था। ऐसे ही कई मुग़ल राजा ट्रांसजेंडर लोगों का इस्तेमाल अपनी रानियों की रक्षा तथा उनकी देख रेख के लिए भी किया करते थे। इन समुदाय के लोगों को ख़्वाजा सराह के नाम से भी जाना जाता था। उर्दू कविताओं में 'चपटी' शब्द का इस्तेमाल एक ही लिंग के लोगों के बीच सेक्स के लिए किया गया है। डच यात्री जोहन सतवोरिंस ने अपनी रिपोर्ट में बंगाल के समलैंगिक मुग़ल पुरुषों के बारे में भी बताया है कि कैसे उस समय में समलैंगिकता आम थी।

इन सब को देख के ऐसा कहा जा सकता है की उस समय के दौर में लोगों के दिमाग में इन भावनाओं से जुड़ीं कोई चेतना अप्राकृतिक या प्रतिबंधित नहीं थी भारतीय इतिहास में समलैंगिकता हमेशा से ही मौजूद रही है। परंतु अंग्रेज़ी शासन के कठोर नियम कानूनों ने समलैंगिकता को भारत में अपराध बना कर रख दिया था जिसका परिणाम हम आज भी देख सकते है।

सन 1861 में अंग्रेज़ी शासन द्वारा यौन तथा समलैंगिक गतिविधियों का अपराधीकरण आईपीसी की धारा 377 के तहत अपराध घोषित किया गया था। इसे अप्राकृतिक घोषित कर दिया गया और कहा गया कि जो भी अपनी इच्छा से किसी पुरुष, महिला या जानवर से प्रकृति के नियमों के खिलाफ जाकर शारीरिक संबंध बनाएगा, उसे आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी। दशकों तक इसे अपराध माना गया और इस वजह से समलैंगिक समाज अपनी भावनाओं का गला घोंटता रहा। इंग्लैंड में लेस्बियन (दो महिलाओं के बीच) संबंध कभी अवैध नहीं माना गया और पुरुषों के बीच समलैंगिक संबंधों को कुछ शर्तों के साथ 1967 से ही वैध माना जाने लगा, जबकि भारत को इंग्लैंड से आजादी मिलने के 70 साल बाद जाकर एलजीबीटी समुदाय की अस्मिता पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाली धारा 377 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 6 सितम्बर 2018 को हटा दिया गया। सन 1977 में महिला गणितज्ञ शकुंतला देवी ने भारत में अपनी पहली “the world of homosexual” नामक पुस्तक का प्रकाशन किया। धारा 377 के तहत ऐसा करने वाली यह पहली महिला नहीं थी और भी कई लोगों ने अनेक माध्यमों से एलजीबीटी के अधिकारो के लिए भारत में कई पत्रिका, फ़िल्म, कविताओं का प्रकाशन किया।

1.3 भारत में एलजीबीटी का विकास

भारत देश में एलजीबीटी समुदाय के लोगों को अंग्रेज़ी शासन की धारा 377 के तहत बहुत से मुश्किलों का सामना करना पड़ा है। आज भी भारत में एलजीबीटी समुदाय के लोग अपनी लैंगिकता को अपनाने से डरते है क्योंकि अधिकतम भारतीय लोग तथा राजनीतिक दल समलैंगिकता को पश्चिमी देशों से प्रभावित हुई संस्कृति मानते हैं।

एलजीबीटी समुदाय के कार्यकर्ता तथा उनके अधिकारों के लिए कठोर कदम उठने वाले लोगों में से एक शकुंतला देवी लोकप्रिय रूप से " ह्यूमन कम्प्यूटर" मानी जाती थी। उनकी किताब "The world of homosexual" सन 1977 में ना केवल समलैंगिकता को लेकर भारत की सीमित सोच पर वार किया बल्कि बहुत से सकारात्मक प्रभाव समलैंगिकता को लेकर समाज के सामने लाई। सन 1981 आगरा में ऑल इंडियन हिजड़ा कॉन्फ्रेंस कि गई जिसमें 50,000 समुदाय के लोग उपस्थित थे। भारत में पहली प्राइड परेड 2 जुलाई 1999 को कोलकाता से निकली जिसमें कुल 15 सदस्य थे। परेड का नाम "फ्रेंडशिप वॉक" था। एलजीबीटी समुदाय के लोगों को भारतीय संविधान के तहत समान अधिकार दिलाने की पहली कोशिश दिल्ली उच्च न्यायालय में हुई। इसे लेकर विरोध तो होता रहा है लेकिन कानूनन इसे रास्ते से हटाने के लिए पहली कोशिश साल 2001 में की गई। नाज फाउंडेशन और AIDS भेदभाव विरोध आंदोलन ने दिल्ली उच्च न्यायालय में इस कलोनियन एक्ट धारा 377 को चुनौती दी। हालांकि, न्यायालय ने इन याचिकाओं को खारिज कर दिया और संबंधों की वैधता के अधिकार को हासिल करने की लड़ाई और लंबी हो गई। पहली सफलता हाथ तब प्राप्त हुई जब साल 2009 में दिल्ली हाई कोर्ट ने एक ही जेंडर के दो लड़कियों

के बीच सहमति से बनाए गए संबंधों को वैध करार कर दिया। कोर्ट ने धारा 377 के प्रावधान को संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 21 का उल्लंघन माना। दिल्ली उच्च न्यायालय के फैसले से कुछ साल के लिए आजादी का एहसास हुआ लेकिन साल 2013 में न्यायालय के फैसले को सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहकर खारिज कर दिया कि कानूनी रूप से इसकी रक्षा नहीं की जा सकेगी। नाज फाउंडेशन ने कोर्ट में पुनर्विचार याचिका दाखिल की लेकिन कोर्ट ने उसे भी खारिज कर दिया। साल 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर्स को तीसरे जेंडर का दर्जा देकर अन्य पिछड़ी जातियों में शामिल कर दिया गया। साल 2016 में एक बार फिर एलजीबीटी ऐक्टिविस्ट्स ने सर्वोच्च न्यायालय में दावा किया कि धारा 377 से उनकी सेक्शुऐलिटी, सेक्शुअल एनॉटमी, सेक्शुअल पार्टनर चुनने की आजादी, जीवन, निजता, सम्मान और समानता के साथ ही संविधान के भाग तीन के तहत दिए जाने वाले मौलिक अधिकारों का भी उल्लंघन किया जा रहा है इन पर न्यायालय का ध्यान आकर्षित कराया गया। न्यायालय ने अगस्त 2017 में दिए एक फैसले में निजता के अधिकार को मौलिक अधिकार बताया और साथ ही, सेक्शुअल ओरियंटेशन को निजता का अहम हिस्सा माना। इसी के साथ, सर्वोच्च न्यायालय के पांच जजों की संवैधानिक पीठ ने जुलाई 2018 में धारा 377 के खिलाफ दाखिल याचिकाओं को सुनना शुरू किया और 6 सितंबर 2018 को न्यायालय ने धारा 377 के तहत समलैंगिक संबंधों को वैध करार देते हुए कहा कि सेक्शुअल ओरियंटेशन प्राकृतिक होता है और लोगों का उसके ऊपर कोई नियंत्रण नहीं होता है। हालांकि, कोर्ट ने नाबालिगों, जानवरों और बिना सहमति के बनाए गए संबंधों पर इस प्रावधान को लागू रखा है। फैसला देते हुए जस्टिस इंदू मल्होत्रा ने यहां तक कहा था कि समाज को एलजीबीटी

समुदाय और उनके परिवारों से उन्हें इतने साल तक समान अधिकारों से वंचित रखने के लिए माफी मांगनी चाहिए। इसी के साथ भारतीय संविधान ने सदियों पुरानी बेड़ियां काटकर प्यार करने वालों को समाज में सिर ऊंचा करने का अधिकार प्रदान किया।

- **भारत में एलजीबीटी समुदाय के अधिकार जो आज भी अस्वीकृत हैं :-**
  - **<u>विवाह का अधिकार:-</u>** भारत नागरिक संघों को मान्यता नहीं देता क्योंकि हमारे देश में एक एकीकृत विवाह कानून नहीं है । भारत में कोई भी विवाह कानून समान-लिंग वाले जोड़ों के बीच विवाह को मान्यता नहीं देता है जिससे इस तरह के एकीकृत विवाह कानूनों की कमी के कारण इन समुदायों को समानता के अधिकार के साथ अपने परिवार को चुनने का अधिकार भी नहीं है। पंजाब और हरियाणा के उच्च न्यायालय ने 2011 में समलैंगिक जोड़े के बीच विवाह के एक मामले को मंजूरी दी थी।
  - **<u>गोद लेना :-</u>** भारत का मौजूदा कानून समलैंगिक जोड़ों को बच्चों को गोद लेने की स्वतंत्रता देता है। कई भारतीय एलजीबीटी जोड़ों ने बच्चों को एकल माता-पिता के रूप में गोद लिया है लेकिन उनके बच्चे पर कोई कानूनी अधिकार नहीं है।
  - **<u>स्वास्थ्य देखभाल :-</u>** एलजीबीटी समुदायों के कई लोग अस्पतालों से उचित स्वास्थ्य सेवा से वंचित हैं क्यूँकि उनको अनुकूल अस्पताल की कमी के कारण इनको सही से इलाज नहीं मील पाता हैं।

1.4 निष्कर्ष

दुनिया के हर अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों को बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जिसमें से एक समलैंगिक समुदाय भी है। यह समुदाय अपने हक़ के लिए हमेशा से लड़ता आया है और दुनिया के कई देशो में यह आज भी अपने मौलिक अधिकारो के लिए समाज, सरकार तथा न्यायालय से लड़ता आ रहा है। भारत में ट्रांसजेंडरो को लोग भिन्न-भिन्न प्रकार से देखते है, कोई उन्हें नाचने वाला कहते है तो कोई धंधे वाला। भले ही उच्च न्यायालय ने एलजीबीटी को अपनाते हुए उन्हें अधिकार दे दिए है परंतु आज भी भारतीय समाज से वह लड़ रहे है। इतिहास में एलजीबीटी समुदाय ने बेहद अहम योगदान दिया है इससे यह बात तो साफ़ हो जाती है की एलजीबीटी भारत में हमेशा से मौजूद था परंतु अंग्रेज़ी सरकार के नियम की वजह से उन्हें अपने अस्तित्व को लोगों से छिपाना पड़ा। आज भारतीय संविधान के वजह से एलजीबीटी समुदाय के लोग ना ही खुल के अपनी लैंगिकता को अपना सकते है बल्कि खुल कर अपने समान जेंडर वाले व्यक्ति से प्यार भी कर सकते हैं।

अध्याय - 2

एलजीबीटी और हिंदी सिनेमा

2.1 हिंदी सिनेमा में एलजीबीटी का चित्रण

समाज को उत्प्रेरित करने में सिनेमा शक्तिशाली माध्यमों में से एक माना जाता हैं। समाज की सच्चाई को दर्शाना तथा लोगों को जागरूक करने में सिनेमा भी अन्य कला आकृतियों की तरह ही एक महत्वपूर्ण योगदान देता है। हिंदी सिनेमा की मुख्य धारा फ़िल्मों में बहुत ही कम एलजीबीटी समुदाय के चरित्र दिखाए गए है जो आम तौर पर नायक नायिका के दोस्त (सहायक अभिनेता) के रूप में दिखाए गए है। हिंदी फिल्म उद्योग इकलौती ऐसी इंडस्ट्री है जो पूरे भारतवासियों को एक जुट करती है परंतु फिर भी दुनिया की सबसे बड़ी इंडस्ट्री ने एलजीबीटी समुदाय की छवि को सुधारने में कोई महत्वपूर्ण कदम नहीं उठाए है। बल्कि देखा जाए तो उन्होंने समाज में इनकी छवि बिगड़ी तथा समाज को इनके कई ऐसे रूप दिखाए जिनसे समाज इनको अधिक घृणा की दृष्टि से देखने लगा।

हिंदी सिनेमा के “गोल्डन ऐरा” के दौर में कई अभिनेताओं जैसे ऋषि कपूर जो कि सन 1975 की फ़िल्म “रफ़ू चक्कर” में क्रॉस ड्रेसिंग करते हुए नज़र आए है। सन 1981 की फ़िल्म “लावारिस” के गीत “मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है” में अमिताभ बच्चन ने एक हिजड़े का रूप लेकर दर्शकों का मनोरंजन किया था ऐसे ही 1990 के दौर की फ़िल्मों में पुरुष अभिनेता ही लोगों को हंसाने के लिए ट्रांसजेंडर का रूप लिया करते थे। देखा जाए तो हिंदी फ़िल्मों में एलजीबीटी पात्रों को हिजड़ा, हास्य

और मानसिक बीमारियों के आधार पर चित्रित किया जाता है और दर्शक जब इस इस प्रकार की प्रस्तुतियों को देखते हैं तो निश्चित रूप से उनका नज़रिया एलजीबीटी समुदाय के लिए वैसा ही बन जाता है। कोई नहीं चाहता उनकी असल ज़िंदगी की घटनाओं तथा बचपन से बड़े होने तक जो कठिनाई इस समुदाय के लोगों ने झेली है उसको लोगों तक फ़िल्मों द्वारा दिखाना।

हिंदी सिनेमा में ट्रांसजेंडर्स का पात्र एक महत्वपूर्ण रूप निभाता है। बॉलीवुड की कुछ फ़िल्मों ने ट्रांसजेंडर के किरदार को बहुत ही गंभीर तरीकों से दर्शकों को रूबरू करवाया है जिसमें से "तमन्ना", "शबनम मौसी", "दायरा", "दरमियान", "वेल्कम टू सज्जनपुर" फ़िल्म है। मशहूर फ़िल्म निर्देशक महेश भट्ट ने हिंदी सिनेमा में पहली बार फ़िल्म "सड़क" में एक किन्नर पात्र को दर्शाया था जिसका रोल अभिनेता सदाशिव अमर पारकर ने महारानी के रूप में किया था। फ़िल्म के पात्र को फिल्म फेयर अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था। फ़िल्म सड़क के बाद महेश भट्ट ने एक असल ट्रांसजेंडर की जीवनी को दर्शाने के प्रयास फ़िल्म "तमन्ना" में भी किया। ऐसे ही फ़िल्म "क्वींस! डेस्टिनी ऑफ डान्स" में हिजड़ा समुदाय के कई रंग दर्शाए गए है परंतु ऐसी फ़िल्मों को दर्शक बहुत ही कम देखना पसंद करते है क्योंकि यह भारतीय रूढ़िवादी सोच से मेल नहीं खाता है। फ़िल्म जैसे आंटी नम्बर-1 में गोविंदा तथा गोलमाल रिटर्नस में तुषार कपूर जैसी फ़िल्मों को दर्शकों का ध्यान ज्यादा आकर्षित करता है। बहुत सी फ़िल्मों में ट्रांस पात्र को इतने गंदे तरीके से दर्शाया गया है जिसमें वह मुख्य पात्र को छेड़ते देखे जा सकते है। फ़िल्म "क्या कूल है हम", "पार्ट्नर", "स्टाइल", "मस्ती" आदि फ़िल्मों में से एक है जिन्होंने मज़ाक के लिए एलजीबीटी समुदाय के पात्रों को फ़िल्मों में दिखाया है।

ऐसा नहीं है हिंदी फ़िल्मों में एलजीबीटी समुदाय की समस्याओं को फ़िल्मों के माध्यम से ना दर्शाया गया हो। बॉलीवुड की कई फ़िल्में जैसे “मस्त कलंदर” (1991) फ़िल्म में पात्र “पिकु”, फ़िल्मों में पहला गे पात्र के रूप में दर्शाया गया था। फ़िल्म “फायर” (1998) पहली लेस्बियन फ़िल्म के विषय में पर्दों पर दिखाई गई। ऐसे ही फ़िल्म “बॉम्गे” (1996), “गर्लफ्रेंड” (2004) तथा भारत की पहली कोठे में बनी फ़िल्म “गुलाबी आयना” (2003)। यह सभी फ़िल्में कभी सिनेमा हॉल के पर्दों पर नहीं आ सकी क्योंकि 90 के दशक में आई पी सी की धारा 377 के कारण से इन सभी फ़िल्मों को फ़िल्म फेस्टिवल के पर्दे पर दिखाया जाता था। आज भी एलजीबीटी फ़िल्मों को पर्दे पर दिखाने के लिए कई फेस्टिवल आयोजित किए जाते हैं जैसे इंडियन क्वर फ़िल्म फेस्टिवल, अंतरराष्ट्रीय मुंबई क्वर फ़िल्म फेस्टिवल, निगाह क्वीर फेस्टिवल (दिल्ली), बेंगलुरु क्वर फ़िल्म फेस्टिवल, कोलकाता लेस्बियन, गे, बाइसेकसुअल, ट्रांसजेंडर फ़िल्म एंड वीडियो फेस्टिवल इत्यादि।

वर्तमान समय में बॉलीवुड की कई फ़िल्म जैसे “माई ब्रदर निखिल”, अलीगढ़, एक लड़की को देखा तो ऐसा लगा”, “ईवनिंग शैडो”, “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” फ़िल्मों ने एलजीबीटी के विषयों पर गहरा ज़ोर दे कर दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है।

2.2 हिंदी सिनेमा में अभिव्यक्त एलजीबीटी समस्याएँ

अधिकतर हिन्दी सिनेमा की फ़िल्मों में एलजीबीटी के पात्रों को या तो खलनायक के रूप में दर्शाया जाता है या फिर हँसी के पात्र से उनका उपहास उड़ाया जाता है। जो समाज में रहने वाले लोगों तथा दर्शकों के दिमाग में एलजीबीटी समुदाय के प्रति अच्छा नज़रिया नहीं बनाता है। ज़्यादातर फ़िल्मों में एलजीबीटी के पात्रों को असामान्य दर्शाया गया है जिससे समाज भी उनको असामान्य लोगों के नज़रिए से देखने का आदि हो जाता है।

हिंदी सिनेमा द्वारा भारतीय समुदाय में फैलाए कुछ आम मिथकों को निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है :-

विषय	**गलत दर्शाना**
• **बाल यौन शोषण**	- ट्रांसजेंडर यौन शिकारियों के रूपों में दर्शाए जाते है। - बचपन में किसी यौन शोषण की वजह से लोग समलैंगिक/ गे बन जाते है।
• **समलैंगिकता स्थितिजन्य है**	किसी भी फ़िल्म में महिलाओं की कमी होनी की वजह से जहां पर सब पुरुष होते है जैसे हॉस्टल, मिलेटरी कैम्प जैसी जगहों पर करीबी स्थिति में दो पुरुषों का समलैंगिक रिश्ता बनता देखा जाता है।
• **फेमिनिन पात्र (महिलाओं के जैसे)**	ज़्यादातर गे पात्रों को महिलाओं की तरह व्यवहार करते हुए दिखाया जाता है।

- **पुरुषों की तरह ड्रेसिंग सेंस** ज़्यादातर लेस्बियन महिलाओं को पुरुषों की तरह के कपड़ों के साथ दर्शाया जाता है।
- **अधिकार** एलजीबीटी समुदाय विशेष अधिकार की मांग करता है।
- **हिजड़ा लोग इंटरसेक्स के रूप में पैदा होते है** हिजड़ा लोग जन्म से ही पुरुष या महिला के गुप्तांग के साथ पैदा होते हैं।
- **वेश्यावृत्ति** सभी ट्रांसजेंडर वेश्यावृत्ति का सहारा लेते है।
- **बलात्कार** पुरुष ट्रांसजेंडर का कभी बलात्कार नहीं हो सकता है।
- **एचआईवी या ऐड्स** एलजीबीटी समुदाय के लोगों से ही एचआईवी अथवा ऐड्स का संक्रमण होता है।
- **गे-गिरी (Gayism)** लोगो ने गे-गिरी को ट्रेंड बना दिया है। अधिकांश व्यक्ति कूल बनने के लिए इसका समर्थन करने का ढोंग करते हैं।

2.3 निष्कर्ष

ऐसे ही कई समस्याओं के साथ एलजीबीटी के अभिव्यक्त किया जाता है। आज़ तक पर्दों पर ऐसी कोई फ़िल्म नहीं दिखी है जिसमें असली समुदाय के लोगों को किरदार के रूप में दर्शाया गया हो वर्तमान में बनी फ़िल्मो में गे/लेज़्बीयन के पत्रों की समस्याओं को दिखाने की बजाय की बजाय उनको हँसी के पात्र से दर्शाया जाता है। भारत में कई फ़िल्म प्रोड्यूसरों ने एलजीबीटी के मुद्दों पर फ़िल्में बनाने का प्रयास किया लेकिन राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण से उनकी फ़िल्मों को बड़े पर्दे पर कभी देखा नहीं गया जिस कारण कई ऐसी फ़िल्में जो समाज को इस समुदाय को प्रति जागरूक तथा एक अच्छी नज़रिए से देखाने का कार्य कर सकती थी परंतु वह उसमें असफल रहे। भारत में कई एलजीबीटी से सम्बंधित किताबें, फ़िल्में तथा अन्य आदि चीज़ें जैसे डॉक्यूमेंट्री, शॉर्ट फ़िल्म सेंसर बोर्ड द्वारा बैन करावा दी जाती थी परंतु आज कल इस प्रकार की फ़िल्में लोगों को ज़्यादा देखनी पसंद होती है क्योंकि उनसे उनको बहुत कुछ सीखने को तथा अपनी देश की संस्कृति का पाठ और समुदाय से संबंधित जागरूकता का ज्ञान मिलता है। देर से ही सही लेकिन बॉलीवुड एलजीबीटी समुदाय से सम्बंधित फ़िल्मों का prakashan बहुत ही अच्छे तरीक़े से कर रहा है और दर्शक भी उसे पसंद करते हैं। कहा जा सकता है धीरे धीरे समाज एलजीबीटी समुदाय को अपना लेगा।

अध्याय - 3

फ़िल्मों की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन

दुनिया भर में लोग सिनेमा को शुरुआत से ही पसंद करते रहे हैं, लेकिन ऐसी फिल्में बहुत ही कम हैं जिन्हें दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल हुई हो। इस शोध के माध्यम से एलजीबीटी पर आधारित दो फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” और “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” की अंतर्वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन निमलिखित प्रकार से किया गया है:-

3.1 कहानी के आधार पर

माई ब्रदर निखिल

फिल्म ‘माई ब्रदर निखिल’ में निखिल के एचआईवी संक्रमित होने और समाज से लड़ते हुए उनके संघर्ष को रेखांकित किया गया है। फिल्म की कहानी 1986 से 1994 में गोवा पर आधारित है। निखिल कपूर (संजय सूरी) स्विमिंग चैंपियन है। वह मस्तमौला इंसान है। सभी लोग उन्हें बेहद पसंद करते है। एक दिन उन्हें पता चलता है कि वह एचआईवी से ग्रस्त है तो उसके माता पिता और दोस्त, सब उनके खिलाफ हो जाते हैं। समाज उन्हें एक अछूत की नज़रों से देखना शुरू कर देता है। उन्हें स्विमिंग टीम तथा जॉब से भी निकाल दिया जाता है। गोवा पुलिस उन्हें पकड़कर स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती करा देती है। अस्पताल के डॉक्टर, पुलिस कर्मी, कर्मचारी आदि निखिल को एक अपराधी की भाँति देखना आरंभ कर देते है। निखिल को उसकी बहन अनामिका (जूही चावला) और नीजेल

डिकोस्टा (पूरब कोहली) का साथ मिलता है। फ़िल्म में नीजेल और निखिल होमोसेक्सुअल होते हैं। फिल्म में निखिल तथा उनके परिवार को एचआईवी होने और समाज से लड़ते और उसके परेशानियों को बहुत ही भावनात्मक तरीके से दिखाया गया है।

शुभ मंगल ज़्यादा सावधान

फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान में दो पुरुषों के समलैंगिक रिश्ते को अपने परिवार से लड़ता दिखाया गया है। फ़िल्म की कहानी कार्तिक (आयुष्मान खुराना) और अमन (जितेंद्र कुमार) के प्यार से नफ़रत करने वाले होमोफोबिक लोगों पर केंद्रित है। इलाहाबाद के त्रिपाठी खानदान का लड़का अमन त्रिपाठी दिल्ली में रहकर नौकरी करता है। पूरा परिवार चाहता है कि अमन शादी कर ले, लेकिन अमन इस विषय से दूर ही रहता है। क्योंकि अमन कार्तिक से प्यार करता है। अमन को पूरा विश्वास है कि इनके समलैंगिक रिश्ते को परिवार की मंजूरी नहीं मिलेगी, लिहाजा वह घर से दूरी बनाकर रखता है। लेकिन चचेरी बहन की शादी में बार बार बुलाए जाने पर अमन अपने बायफ्रेंड के साथ इलाहाबाद पहुंचता है। जल्द ही अमन के पिता (गजराज राव) और मां (नीना गुप्ता) को उनके रिश्ते की सच्चाई पता चल जाती है। वो अपने बेटे की "बीमारी" दूर करने के लिए कई हथकंडे अपनाते हैं। लेकिन अमन और कार्तिक पूरे आत्म विश्वास के साथ अपने रिश्ते को स्वीकार करते हैं और उसके लिए परिवार से लड़ते भी हैं। ठीक वैसे ही जैसे हर प्रेम कहानी में होता है। फिल्म कॉमेडी से भरपूर है जो कि समाज को बहुत ही प्रभावी संदेश देती है- खुलकर प्यार करना, अपने आपको वैसे ही अपनाना जिस प्रकार वे है। तथा किसी लिंग में भेद न करने का संदेश देती है।

3.2 अभिनय के आधार पर

माई ब्रदर निखिल

फिल्म माई ब्रदर निखिल में संजय सूरी ने निखिल कपूर का रोल निभाया है, जबकि जूही चावला उसकी बहन अनामिका के किरदार में है। इसके अलावा पूरब कोहली भी महत्वपूर्ण भूमिका में हैं। अभिनय के आधार पर देखा जाए तो संजय सूरी ने निखिल का रोल बेहद उम्दा तरीके से निभाया लोगों के इंसान बनने से लेकर उनके ठुकराने के बाद के दो रूप साफ़ साफ़ फ़िल्म में दिखते है। एक गे की ज़िंदगी में परिवार और समाज की चुनौतियों का सामना करना तथा उनके पूरे करियर को सिर्फ़ एक बीमारी की वजह से जिन नुक़सान तथा मुश्किलों का सामना करना पड़ा वह साफ़ तौर पर देखा जा सकता है। अनामिका के रोल को जूही चावला ने एक बहन की भूमिका के तौर पर बहुत अच्छी तरह से निभाया है। सब लोगों का साथ छूट जाने के बाद एक अकेली लड़की को न्यायालय और समाज से अपने भाई की आज़ादी के लिए कठिन संघर्ष करते हुए दिखाया गया है। अन्य पात्रों की ज़्यादा स्क्रीनिंग ना होने के कारण फ़िल्म में मुख्य आकर्षण का केंद्र एक भाई और उसकी बीमारी से लड़ती उसकी बहन पर देखने को मिलता है। इस फिल्म को राष्ट्रीय पुरस्कार से भी नवाजा गया है। जूही चावला को इस फिल्म में जबरदस्त अभिनय के लिए बेस्ट एक्ट्रेस का पुरस्कार भी हासिल हुआ है।

शुभ मंगल ज़्यादा सावधान

शुभ मंगल ज्यादा सावधान में आयुष्मान खुराना और जितेंद्र कुमार ने गे कपल का रोल निभाया है। साथ ही परिवार के सदस्यों के रोल में गजराज राव, नीना गुप्ता, मानवी गागरू, पंखुड़ी अवस्थी,

सुनीता राजवार, मनुऋषि चड्ढा और नीरज सिंह है।फिल्म की स्टारकास्ट मजबूत है। समलैंगिक लव स्टोरी में आयुष्मान खुराना और जितेन्द्र कुमार ने अपने किरदारों के साथ पूरा न्याय किया है। पुरानी बॉलीवुड फिल्मों से अलग एक नोज़पिन के अलावा आयुष्मान के किरदार में कुछ भी ऐसा नहीं किया गया है, जिससे उनमें स्त्रीत्व की झलक मिल सके। चाल ढ़ाल, हाव भाव सभी आम है। गजराज राव- नीना गुप्ता ने माता पिता का किरदार निभाया है और दोनों के बीच चल रही रस्साकशी दर्शकों का ध्यान आकर्षित करती है। गजराज राव और उनके छोटे भाई के किरदार में मनुऋषि चड्ढा की कहा-सुनी शुरुआत से ही अच्छी लगी है। सह कलाकारों में मनुऋषि चड्ढा, सुनीता राजवर, मानवी गगरू, पखुंरी अवस्थी अपने किरदारों में जंचे हैं। फ़िल्म के सभी कलाकारों ने अपने अभिनय से अपने किरदारों का औचित्य साबित किया है।

3.3 सामाजिक सरोकार के आधार पर

माई ब्रदर निखिल

फ़िल्म माई ब्रदर निखिल ने समाज में बनी एचआईवी ऐड्स के प्रति लोगों की गलत सोच पर ध्यान आकर्षित करने के कार्य किया है। साथ ही समलैंगिक रिश्तों का भी एक छोटे रिश्ते पर ना छिपने वाला अंग दिखाया है। सन 2005 में बनी यह फ़िल्म बॉलीवुड की पहली ऐसी फ़िल्म थी जिसने उस वक़्त में एक ऐसे मुद्दे को पकड़ा जिसका प्रभाव समाज में कुछ इस प्रकार पड़ा जैसे मानो पहली बार सिनेमा से लोगों को कुछ सीख मिली। फ़िल्म माई ब्रदर निखिल ने सामाजिक सरोकार के आधार पर यह संदेश दिया है कि ऐड्स जैसी बीमारी सिर्फ़ समलैंगिक रिश्तों से नहीं होती। समाज को

किसी भी व्यक्ति को उसके लिंग तथा उसकी बीमारी के कारण उससे औरों से भिन्न व्यवहार नहीं करना चाहिए।लोगों को इस बात पर ज्यादा ध्यान देने के बजाय कि किसी को ऐड्स कैसे हुआ, इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि उसके साथ किस तरह मानवीय बर्ताव किया जाए और कैसे उसे रोग से लड़ने के लिए शक्ति दी जाए।

शुभ मंगल ज़्यादा सावधान

फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान का मकसद साफ़ झलकता है कि दो प्यार करने वालों के बीच सिर्फ प्यार का रिश्ता होता है चाहे वो पुरुष का पुरुष से ही क्यूँ ना हो। जिस समाज में एक लड़के की शादी केवल एक लड़की से होती है वहां एक पुरुष का दूसरे पुरुष से शादी करना गुनाह है ऐसे ही चुनौतियों का सामना करते गे कपल को दिखाया है। फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान ने समाज में बनी समलैंगिक स्टीरियोटाइप को तोड़ते हुए लोगों के दिमाग पर एक छाप छोड़ी है कि अपने जीवन साथी चुनने का अधिकार हमारे देश का कानून देता है।

3.4 संवाद के आधार पर

माई ब्रदर निखिल

फ़िल्म माई ब्रदर निखिल के कई संवाद इतने भावनात्मक तथा भावुक तरीक़े से दर्शाए गए हैं जिससे दर्शकों का दिल उभर आता है। कई बातें निखिल को उसके परिवार तथा लोगों द्वारा बोली गई जिससे उसकी मानसिक स्थिति पर गहरा असर पड़ा है वे निम्नलिखित है :-

- लोगों से पता चलने के बाद निखिल के पिता ने उन्हें बुरी तरह पीटा और कहा :-

“ नालायक, जब तू पैदा हुआ था तभी तेरी माँ को तेरको अपनी कोक में मार देना चाहिए था। बेशरम अब तेरी वजह से हम किसी को मुँह नहीं दिखा सकते।”

इस संवाद में निखिल के पिता ने उसकी बीमारी का पता चलते ही उसको अपने परिवार से अलग कर दिया।

- समाज द्वारा ठुकराने के डर से निखिल के माता पिता ने लोगों को बोला:-

“ निखिल अब हमारा बेटा नहीं है, वो हमारे लिए मर चुका है”

एक बीमार व्यक्ति को उसके घरवालों से ही ना अपनाने का दुःख इस संदेश के द्वारा फ़िल्म में दिखाई देता है।

- निम्न कई ऐसे संवाद पुलिसकर्मीयो तथा डाक्टरों द्वारा निखिल को बोले गए जिससे ना केवल निखिल की लैंगिकता पर सवाल उठाया जाता है बल्कि उसे एक गंदे अपराधी तथा अछूत व्यक्ति की तरह देखा जाता है:-

- **“आज कल के लड़के पता नहीं क्या क्या करते है।”**
- **“ग्लव्ज़ पहन के हाथ लगाना, इसकी वजह से हम भी मरे क्या?”**
- **“सर इसे जल्दी भेज दीजिए यह बीमारी पहले कभी गोवा में तो नहीं आई”**
- **“इसको यहाँ से ले जाइए और सेनीटुरियम में बंद करके रखे”**
- **किसके साथ मस्ती की लड़का था या लड़की? या दोनो? क्या ज़माना आगा। देखने में तो एक दम नॉर्मल लगता है।**
- **तुमको तो गोली मार देनी चाहिए, सरकारी पैसा क्यूँ बर्बाद कर रहे हो।**

फ़िल्म के निम्नलिखित संवादो से निखिल और नाईजल के प्यारे रिश्तों को इस तरह दर्शाया गया है जिससे यह साफ़ झलकता है कि दोनो एक दूसरे से कितना प्यार करते है।

- नाईजल - "जब तक निखिल यहाँ है मैं कहीं नहीं जाऊँगा।

  निखिल - हाँ, तुम बॉम्बे जाकर अपना ब्लड टेस्ट करवा लो।

  नाईजल - "मैंने तुमसे राय माँगी, तुम चुप रहो मेरे को मत बताओ मुझे क्या करना है" ओके?

- निखिल - बहुत नाराज़ होना मेरे से?

  नाईजल - हाँ, तुमने इतनी बड़ी बात मेरे से छुपाई।

  निखिल - छुपाना नहीं चाहता था, सिर्फ़ शक था।

  नाईजल - मुझे बता तो सकते थे।

  निखिल - तुम्हें बताना था लेकिन "दे अरेस्टेड मी"

- निखिल - अपना ख़्याल रखना, बी गुड, अपने आपको अकेला मत समझना।

  ऐसे ही कई संवादो में निखिल और नाईजल दोनो को एक दूसरे के प्रति चिंतित होते देखकर यह साफ़ लगता है, प्यार प्यार होता है।

- हमेशा अपने भाई का साथ देने वाली बहन अनु और निखिल के संवाद एक आम भाई-बहन के रिश्तों को दर्शाते हैं। जैसे "मेरे बेस्ट भाई हो तुम, कल तुम ही जीतोगे", "नो मैटर वट आई ऑल्वेज़ लव यू", शादी के बाद तुम्हारी याद आएगी, प्रिन्सेस मुझे अच्छा नहीं लगता, सेम टेक केयर ऑफ़ माई प्रिन्सेस आई लव यू अनु।

- फ़िल्म के अंत में निखिल और उसके पिता के बीच कुछ ऐसे संवाद हुए जिसे हर एक दर्शक अपने

दिलो से जोड़ सकता है:-

निखिल - पिछले दो सालो से मैं आपका इंतजार कर रहा था। आई सपोज़ आई लेट यू डाउन।

पिता - यू ऑल्वेज़ मेड़ मी प्राउड सन।

शुभ मंगल ज़्यादा सावधान

फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान के संवाद कॉमडी, रोमैन्स और भावनात्मकताओं से भरपूर है। फ़िल्म के निम्नलिखित भावनात्मक संवाद दशकों के दिलो में एक छाप छोड़ जाते हैं :-

- **"रोज हमें लड़ाई लड़नी पड़ती है जिंदगी में, लेकिन जो लड़ाई परिवार के साथ होती है वो सारी लड़ाइयों में सबसे बड़ी और खतरनाक होती है"** कार्तिक जब अपने बायफ्रेंड के पिता से यह संवाद कहता है तो उसकी आंखों में बेबसी और गुस्से के साथ एक विश्वास भी झलकता है।
- घरवालों के सामने अपने रिश्ते को अपनाने के पहले कार्तिक ने अमन को कई बार कहा था- **"मेरे पिता अनपढ़ हैं.. लेकिन तेरे घरवाले तो पढ़े लिखे हैं, जरूर समझ लेंगे.."** जाहिर है कार्तिक का तंज समाज के उस तबके पर था, जो पढ़े लिखे होने के बावजूद समलैंगिक रिश्ते को स्वीकार करने से कतराते हैं और इसे 'नॉर्मल' नहीं समझते।
- एक दृश्य में भूमि पेडनेकर कहती हैं- **"हमारे यहां पॉलिसी मैच्योर हो जाती है, बेटी मैच्योर नहीं होती".** यह संवाद गौगल अपने परिवार को बोलती है जब उसके घरवाले उसको उसकी मर्ज़ी से शादी की तैयारी नहीं करने देते, उनके हिसाब से वह एक नासमझ बच्ची है।
- फ़िल्म में एक सीन ऐसा आता है जिसमें कार्तिक से अमन के चाचा पूछते है :- **"बेटा तुम गे कब बने"** जिसका कार्तिक जवाब देता है **"अंकल आप गे कब नहीं बने"?, मैं तो बचपन से ही नहीं हूँ।** इस संवाद के द्वारा फ़िल्म यह संदेश देना चाहती है की कोई गे बनता नहीं है वह बचपन से ही होता है बस

- उसको अपनी सेक्सुएलिटी के बारे में थोड़ी देर से पता चलता है।
- फ़िल्म में कार्तिक स्कूल में पढ़ाई जाने वाली कविता को गलत बताते है और सही करके बोलते है **“जैक एंड जॉनी वेंट उप द हिल टू लिव, लव एंड लाफ़्टर, जैक की ले लि पापा ने जॉनी छिप गया भाग कर”** कार्तिक इस कविता के माध्यम से दर्शकों को बताते है चाहे हमें विद्यालयो में कोई ऐसी कविता हमें किताबो में नहीं पढ़ाई गई पर जैक से किसी ने पूछा उसको जॉनी के साथ जाना है कि जिल के साथ।
- **“तुझे क्या लगता है सिर्फ़ तेरा कल्चर है ये? हर जगह यही होता है।”** इस संवाद में कार्तिक उस हर एक एलजीबीटी समुदाय के परिवार के बारे में बात करते है जो अपने बच्चे को स्वीकार नहीं करते है।
- फ़िल्म के एक सीन में कार्तिक से अमन बोलता है **“वो जनता है उसका बेटा सिर्फ़ लड़कों को पसंद करता है। अरे वो माँ बाप है वो सब जानते है, शुरू से जानते है। हमारा पुल्लिंग, स्त्रीलिंग फ़किंग एव्रीथिंग बस मनाने से डरते है की लोग क्या कहेंगे? सोसाइटी क्या कहेगी?”** हमारे माँ-बाप हमारे बारे में सब जानते है, पर सोसाइटी के डर से कभी भी वो हमें उन सब चीज़ों के लिए हाँ नहीं बोल पाते जो सोसाइटी कभी नहीं अपनाएगी।
- **“हमें नहीं पता बेटा कि हम ये सब समझ पाएँगे की नहीं लेकिन हमारी समझ की वजह से तुम हे आधी अधूरी ज़िंदगी जीने की ज़रूरत नहीं है। जा बेटा जिले अपनी ज़िंदगी।”** फ़िल्म के इस संवाद ने सभी के मन और दिल को छू लिया। क्यूँकि परिवार की तरफ़ से स्वीकार करना दुनिया से सबसे बड़ी चीज़ है। इसमें शंकर त्रिपाठी अपने बेटे अमन से ठीक उसी तरह बोलते है जैसे फ़िल्म दिल वाले धुल्हनिया ले जाएगे में सिमरन के पिता उसको बोलते है जा बेटा जिले अपनी ज़िन्दगी।

- फ़िल्म के अंत में कार्तिक हर एक समलैंगिक प्यार के रिश्तों के लिए एक लाइन बोलते है:-

  “हम भाग रहे है अपने अपने प्यार के लिए जैसे लैला जूलीएट के लिए भागी होंगी, मजनू रोमियो के लिए, सिमरन रजनी के लिए, वीरू शायद जय के लिए, क्यूँकि शादियाँ मूरत से होती है पर प्यार का कोई मोहरत नहीं होता। ना रंग होता है और ना कोई लिंग होता है। प्यार के लिए अपने दिल के 377 को हटाना पड़ेगा और जब तक वो नहीं हटेगा हम भागेंगे अपने अपने प्यार के लिए भागेंगे।”

3.5 गीत संगीत के आधार पर

माई ब्रदर निखिल

माई ब्रदर निखिल फ़िल्म में कुल 12 गाने हैं । इनमें से एक गाने को तीन बार अलग अलग गायक ने अपनी आवाज दी है। फिल्म के गानों को लकी अली, सुनिधि चौहान, केके, शान और विवेक फिलिप ने गया है। फ़िल्म के कुछ प्रसिद्ध गीत निम्न है:-

- **ले चले - शान**
- **ले चले - केके**
- **ले चले - सुनिधि चौहान**
- **लीविंग होम - विवेक फिलिप**
- **आई मिस माई लिटिल ब्रदर - विवेक फिलिप**
- **टिल वी मेट अगेन - विवेक फिलिप**

शुभ मंगल ज़्यादा सावधान

फिल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान का संगीत दिया है तनिष्क बागची, टोनी कक्कड़ और वायु ने। गाने फिल्म को कहीं भी फंसाते नहीं हैं, बल्कि दिलचस्पी से कहानी को आगे बढ़ाते हैं। फ़िल्म के गीत निम्न है:-

- **मेरे लिए तुम काफ़ी हो - आयुष्मान खुराना**
- **ऊ ला ला - नेहा कक्कड़, टोनी कक्कड़**
- **प्यार तेनु करदे गबरू - रोमी**
- **ऐसी तैसी - मिका सिंह**
- **राख - अरिजित सिंह**
- **क्या करते है सजना - अनुराधा पौडवाल, ज़ारा खान**
- **अरे प्यार करले - बपी लहरी, आयुष्मान खुराना**

3.6 व्यवसाय के आधार पर

- 25 मार्च 2005 को रिलीज़ हुई फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” ने बॉक्स ऑफ़िस में 5 लाख रुपय कमाए।
- 21 फ़रवरी 2020 को रिलीज़ हुई फ़िल्म “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” ने बॉक्स ऑफ़िस में 863.9 मिल्यन रूपय कमाए जिसमें से 95.5 मिल्यन फ़िल्म ने पहले दिन कमाए, 110.8 मिल्यन दूसरे दिन और 120 मिल्यन तीसरे दिन। 14.03 करोड फ़िल्म ने बाहरी देशों के सिनेमा से कमाए।

शोध निष्कर्ष

जैसे जैसे समय बदल रहा है और यौन अल्पसंख्यकों को धीरे-धीरे हिंदी सिनेमा में जगह मिल रही है। समलैंगिक कपलस, गे, बाइसेक्शूअल, उभयलिंगी, ट्रांसजेंडर और हिज़्रा और अन्य पत्र जिन्होंने एलजीबीटी समुदाय को बॉलीवुड फ़िल्मों द्वारा सकारात्मक तरीके से समाज में पहचान की है, उन्होंने समुदाय के लिए एक मिसाल के रूप में कार्य किया है। भारतीय समाज बदल रहा है और इसके साथ ही लोगों की मानसिकता भी बदल रही है। कई निर्देशकों ने एलजीबीटी समुदाय के लोगों और उनके मुद्दों पर फिल्में बनाने में हाथ आजमाया है लेकिन अभी भी बहुत सी चीजें अनसुलझी और समाज को दिखानी बाक़ी हैं। भारत में आज भी लोग मुख्यधारा के समाज द्वारा भेदभाव के डर से बहुत से लोग अपनी लैंगिक पहचान और यौन अभिविन्यास के बारे में खुलकर बात करने से डरते हैं। सिनेमा के संदर्भ में आज भी बहुत अधिक प्रतिनिधित्व की आवश्यकता है जिससे उन लोगों के बीच बातचीत के लिए बहुत आवश्यक मंच प्रदान हो सकता है जो अभी भी दरवाज़ों में बंद हैं और समाज के ठुकराने के डर से अपने आपको अपना नहीं पा रहे हैं। इस शोध के माध्यम से एलजीबीटी समुदाय से संबंधित हिंदी सिनेमा में बनायी गई दो फ़िल्मों को लिया गया है। दोनो ही फ़िल्में अलग अलग सालों में प्रकाशित हुई है जिसके कारण हिंदी सिनेमा के हो रहे विकास और बदलाव को इस शोध के माध्यम से देख सकते है। फिल्मों की अंतर्वस्त्रों का तुलनात्मक अध्ययन कहानी, अभिनय, सामाजिक सरोकार, संवाद, गीत-संगीत, व्यवसाय के आधारों पर किया गया है जिससे कई

महत्वपूर्ण तुलना सामने आती है जैसे :-

- 2005 में बॉलीवुड के पर्दों पर प्रकाशित होने वाली फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” एक ऐसी फ़िल्मों में से एक मानी जाती हैं जिसने समाज को पहली बार एलजीबीटी की परेशानियों से रुबरु करवाया था। फ़िल्म में समलैंगिक जोड़े को ऐड्स की परेशानियों तथा बीमारी की वजह से समाज और परिवार से लड़ता दिखाया गया है। 2005 रिलीज़ होनी की वजह से फ़िल्म में बोहोत कम ऐसी संवादों का इस्तेमाल किया गया है जिससे कोई समाज नहीं पता की फ़िल्म में सेम जेंडर के लोगों को दर्शा रहे है या दो दोस्तो को। इसके अतिरिक्त फ़िल्म 2020 में रिलीज़ हुई फ़िल्म “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” में साफ़ साफ़ गे जोड़ो को दिखाया गया है बल्कि एक सीन में सेम जेंडर के अभिनेताओ को चुम्न करते हुए भी दिखाया गया है।
- दोनो ही फ़िल्म समलैंगिक संबंधों के इर्द-गिर्द घूमती दिखाई देती है परंतु फ़िल्म माई ब्रदर निखिल में भावनात्मक तरीक़े से 2005 में फैल रही बीमारी ऐड्स को मुख्य केंद्र में रखा गया है। फ़िल्म में ऐड्स के प्रति फैल रही ग़लत सोच से लड़ते और जीवन की परेशानियों को दिखाया गया है बल्कि फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान में कॉमेडी के माध्यम से समाज में बनी समलैंगिकता के प्रति लोगों की सोच पर प्रभाव डालने का प्यास किया गया है।
- फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” ने समाज में बनी एचआईवी ऐड्स के प्रति लोगों की गलत सोच पर ध्यान आकर्षित करने के कार्य किया है जबकि फ़िल्म “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” ने समाज में बनी समलैंगिक स्टीरियोटाइप को तोड़ते हुए लोगों के दिमाग पर एक छाप छोड़ी है कि अपने जीवन साथी चुनने का अधिकार हमारे देश का कानून देता है।

- फ़िल्म माई ब्रदर निखिल के गीत इतने लोकप्रिय नहीं हुए इसका कारण फ़िल्म का विषय और एक ही गाने को तीन बार अलग अलग गायकों द्वारा गया जाना हो सकता है जबकि फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान के गाने बहुत लोकप्रिय हुए, रेडीओ मिर्ची तथा 93.5 एफ एम पर इस फ़िल्म के गाने दो महीनो तक टॉप 20 ट्रेंडिंग लिस्ट में भी रहे।
- संवाद के आधार पर फ़िल्म माई ब्रदर निखिल के संवाद आम थे परंतु फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान के संवादों में कई टेंडिंग सबदो तथा कई ऐसी लाइनों का इस्तेमाल किया गया जिससे हर कोई आम व्यक्ति समझ पाए।
- व्यवसाय के आधार पर फ़िल्म माई ब्रदर निखिल ने अपने बजट से ज़्यादा नहीं कमाया पर फ़िल्म शुभ मंगल ज़्यादा सावधान ने भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कई देशों में अपने बजट से 10 गुना कमाया।
- फ़िल्म माई ब्रदर निखिल की समय अवधि 117 मिनट की है जबकि शुभ मंगल ज़्यादा सावधान फ़िल्म की समय अवधि 120 मिनट है।
- फ़िल्म माई ब्रदर निखिल को आइ एम डी बी द्वारा 7.2/10 रेटिंग मिली है व 78% रोट्टेन टमेटोज़ ने फ़िल्म को रेट किया है जबकि शुभ मंगल ज़्यादा सावधान फ़िल्म को टाइम्ज़ ओफ़ इंडिया द्वारा 3.5/5 , 5.8/10 आइ एम डी बी द्वारा और 71% बुक माई शो ने रेट किया है।

संदर्भ

1. 15.2 Functions and theories of Mass communication. (N.d.) Retrieved February 2, 2018.
2. Bhattacharyya, A. (2016). The variation in the depiction of Queer sexuality in India and the question of social change. International Journal of innovation research and development, 5(2278-0211), 81_84, Retrieved December 10, 2017.
3. Chaudhary, H.S. (2012). Re-presentation of homosexuals LGBT in Indian literature, media and cinema. Retrieved December 3017.
4. Dudrah, R.K (2006). Bollywood- Sociology Goes To The Movies. SAGE Publications.
5. Gaulett, D. Media, Gender and Identity. Rutledge.
6. KashyapM, (2015 September 25) the Indian experience of a taboo called "Homosexuality" Retrieved from 2.0 https://www.saddahaq.com/the-indian-experience-of-a-taboo-called-homo-sexuality
7. The Lallantop (2018, September 21) मुग़लों और तुर्कों में समलैंगिकता को लेकर कहीं ज़्यादा खुलापन था। Mughal, Turk & Homosexuality. Retrieved from https://youtu.be/RkK4yVUbQXY
8. Box Office (2020, February 24) Shubh Mangal Jyada Saavdhan PUBLIC REVIEW. Retrieved from https://open.spotify.com/episode/62FNzNC2XOGp-wuwRzDPAWw?si=6kb50kEATS2csRLZx6CT1g .

9. Navbharat Times (26 April, 2019) आसान भाषा में समझें LGBTIQ का मतलब। Retrieved from https://navbharattimes.indiatimes.com/education/gk-update/know-the-full-form-and-meaning-of-lgbtiq/articleshow/69053487.cms

10. BBC News (14 March, 2012) India has 2.5m gays, government tells supreme court. Retrieved from https://www.bbc.com/news/world-asia-india-17363200

11. THE HINDU (2018, September 08) Reactions to Section 377 verdict | Jamaat-e-Islami Hind expresses dismay. Retrieved from https://www.thehindu.com/news/national/live-reactions-to-supreme-court-judgment-on-section-377/article24879585.ece

परिशिष्ट

फ़िल्म “माई ब्रदर निखिल” का पोस्टर :-

3.1 माई ब्रदर निखिल (पृष्ठ25)

3.1 माई ब्रदर निखिल (पृष्ठ 25)

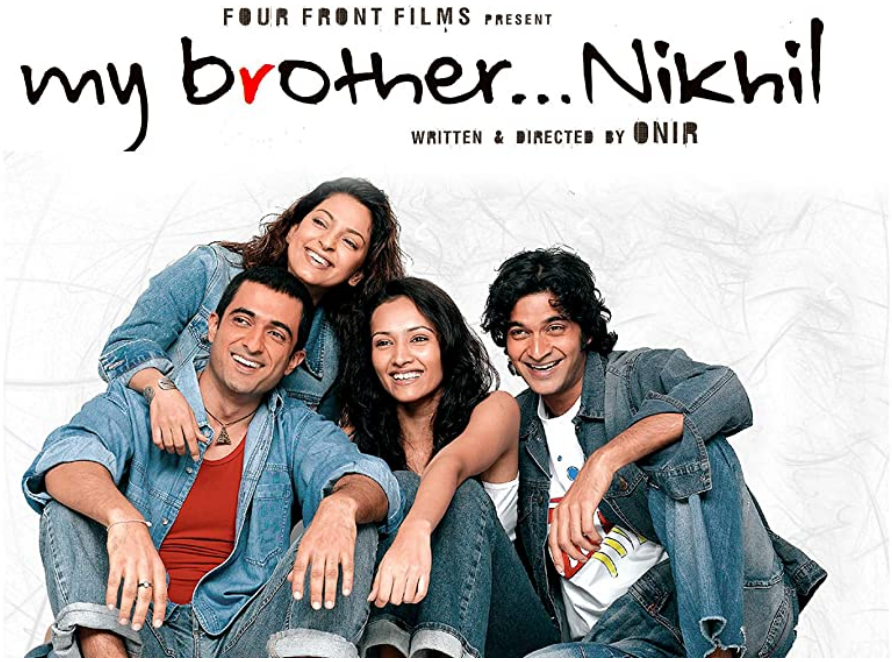

फ़िल्म “शुभ मंगल ज़्यादा सावधान” का पोस्टर :-

3.1 शुभ मंगल ज़्यादा सावधान (पृष्ठ 26)

3.1 शुभ मंगल ज़्यादा सावधान (पृष्ठ 26)